जयपुर का इतिहास

शासन किया – कच्छवाह वंश

(भगवान राम के पुत्र कुश के वंशज)

- *कुलदेवी – जमुवाय माता*
- *आराध्य देवी – शिला देवी – आमेर दुर्ग*
- *कुलदेवता – अम्बिकेश्वर महादेव – आमेर*
- *आराध्य देवता – गोविंद देव जी – जयपुर*
- *प्राचीन काल में इस क्षेत्र को **ढूंढाड़** के नाम से जानते थे।*

राजधानी

***(1) दौंसा** – 1137 ई. में दुल्हेराय ने बड़गूर्जरों को पराजित कर बनाई थी।*

***(2) मांची / जम्वारामगढ़** – 1137 ई. में दुल्हेराय ने मीणाओं को पराजित कर बनाई।*

***(3) आमेर** – 1207 ई. में कोकिल देव ने मीणाओं को पराजित कर राजधानी बनाया।*

***(4) जयपुर** – 1727 ई. में सवाई जयसिंह ने बनाई।*

दुल्हेराय / तेजकरण / ढोला

- *मूल नाम – साल्हकुमार*
- *कच्छवाह वंश का संस्थापक / आदि पुरुष / मूल पुरुष*
- *रामगढ़ में कुलदेवी जमुवाय माता का मंदिर बनवाया।*

ढोला मारू की प्रेम कहानी

- *ढोला (नरवर – मध्यप्रदेश के शालद का पुत्र)*
- *मारू (पूंगलगढ़ – बीकानेर के पूंगल की बेटी)*
- *ढोला-मारू की शादी पुष्कर में होती है।*
- *विवाह के समय ढोला – 3 साल, मारू – 1.5 साल की थी।*

कोकिलदेव

- मीणाओं को हराकर आमेर को 1207 ई. में राजधानी बनाया।
- अम्बिकेश्वर महादेव मंदिर का निर्माण करवाया था।

पंचवनदेव

- पृथ्वीराज चौहान ने महोबा का प्रशासक नियुक्त किया।
- तराइन युद्ध में लड़ते हुए वीरगति को प्राप्त हुए।

राजदेव

- आमेर में कदमी महल का निर्माण करवाया, यहाँ पर आमेर के शासकों का राजतिलक मीणाओं द्वारा किया जाता था।

पृथ्वीराज कच्छवाह

- आमेर राज्य को अपने 12 पुत्रों में बाँट दिया।
- आमेर 12 कोटड़ी कहलाया।
- प्रमुख जागीर – राजावत, नाथावत, खंगारोत, बाँकावत।
- 1527 ई. में खानवा के युद्ध में राणा सांगा की ओर से लड़ते हुए वीरगति को प्राप्त हुए।
- इनके काल में गलता जी (जयपुर) में कृष्णदास पयहारी ने रामानंदी सम्प्रदाय की स्थापना की।

रतनसिंह

- शेरशाह सूरी की अधीनता स्वीकार की।

भारमल (1547–1574 ई.)

- 1562 में बादशाह अकबर ने अजमेर की तीर्थयात्रा की, तब भारमल ने चगताई खाँ की सहायता से अकबर से भेंट की।
- भारमल ने अपनी पुत्री हरखा बाई / मानमती / शाही बाई का विवाह **6 फरवरी 1562** को साँभर में अकबर से कर दिया।
- इससे सलीम (जहाँगीर) का जन्म हुआ। जहाँगीर ने अपनी माता हरखा बाई का नाम **मरियम उज्जमानी** रखा।
- राजपूताना के पहले शासक जिसने मुगलों की अधीनता स्वीकार की और वैवाहिक सम्बन्ध बनाए।
- अकबर ने भारमल को **5000** का मनसबदार बनाया तथा **राजा व आमीर-उल-उमरा** की उपाधि दी।

नोट – अकबर-भारमल की पहली मुलाकात **1556** में जन्नू खाँ ने नारनौल (दिल्ली) में करायी थी।

भगवंतदास कच्छवाह (1574-1589)

- अकबर ने इनको भी **आमीर-उल-उमरा** की उपाधि दी और 5000 का मनसबदार बनाया।
- चित्तौड़ आक्रमण (1568 ई.) में अकबर का साथ दिया।
- 13 फरवरी 1585 में भगवानदास ने अपनी पुत्री **मानबाई** का विवाह जहाँगीर से किया था।
- इनसे **खुसरो** का जन्म हुआ था।

मिर्जा राजा मानसिंह (1589-1614 ई.)

- जन्म – 1550 ई., मोजमाबाद (जयपुर)
- 12 वर्ष की आयु में ही मुगल दरबार में चले गये।
- अकबर + जहाँगीर की सेवा की।
- उपाधि – **फ़र्ज़न्द (पुत्र) + मिर्जा राजा** (अकबर ने दी)
- 1569 में अपने पिता भगवानदास के साथ रणथम्भौर के सूजा हाड़ा के विरुद्ध प्रथम सैनिक अभियान किया।
- 1572 ई. में **सारणल युद्ध (गुजरात)** में महत्वपूर्ण भूमिका निभायी।
- 1573 ई. में डूँगरपुर शासक आसकरण को पराजित किया।

काबुल की सूबेदारी (1585-1587)

- अकबर ने अपने सौतेले भाई मिर्जा हाकिम के विद्रोह को दबाने के लिए मिर्जा राजा मानसिंह को काबुल भेजा।
- मानसिंह ने काबुल में मिर्जा हाकिम को हराया तब अकबर ने मानसिंह को **5000 जात-सवार** देकर मनसबदार बनाया तथा **मिर्जा राजा** की उपाधि दी।
- काबुल में पाँच कबीलों पर विजय के बाद कबीलों ने अपने ध्वज का हिस्सा फाड़कर मानसिंह को दिया था।
- इसी पाँचरंगे ध्वज को जयपुर का राजकीय ध्वज बनाया गया।

बिहार की सूबेदारी (1587-1594 ई.)

- काबुल से मानसिंह का स्थानान्तरण बिहार कर दिया गया क्योंकि वहाँ स्थानीय जागीरदार विद्रोह कर रहे थे।
- 2 बार बिहार में सूबेदार रहे, यहाँ **मानपुर** नगर बसाया।
- 1592 ई. में उड़ीसा के अफगान शासक **नासिर खाँ** व **कतलू खाँ** को हराया तथा पुरी (उड़ीसा) के **जगन्नाथ मंदिर** को अकबर के अधिकार में किया।

बंगाल की सूबेदारी (1594–1605 ई.)

- अकबर ने 1594 ई. में बंगाल का सूबेदार बनाया।
- 3 बार बंगाल के सूबेदार रहे।
- 1604 ई. में पूर्वी बंगाल के राजा **केदार कायस्थ** को हराकर **जेस्सोर** नामक स्थान से **शिला देवी** की मूर्ति आमेर लाये।
- 1605 ई. में बंगाल जीतने पर अकबर ने **7000** का मनसबदार बनाया, लेकिन बाद में जहाँगीर ने मनसबदारी में कमी कर दी।
- बंगाल में **अकबरपुर** (वर्तमान नाम – राजमहल) बसाया।

नोट – अकबर ने 7000 की मनसबदारी दो व्यक्तियों को दी।

1. मिर्जा राजा मानसिंह
2. मिर्जा अजीज कोका

- सर्वाधिक हिन्दू मनसबदारों की संख्या औरंगजेब के काल में (33 प्रतिशत) थी तथा अकबर के समय 22 प्रतिशत थी।
- मानसिंह ने **गोविन्ददेव जी मंदिर** (वास्तुकार – गोविन्द दास) वृन्दावन (उ.प्र.) में बनवाया, जिसे बाद में सवाई जयसिंह ने जयपुर में चन्द्रमहल के पास पुनः स्थापित करवाया।
- मानसिंह अकबर के **नवरत्नों** में शामिल थे।
- दरबारी कवि **पुण्डरीक विट्ठल** ने रागमाला, रागमंजरी, नर्तन निर्णय, द्रुती प्रकाश ग्रंथों की रचना की।
- मानसिंह के समय **कवि नरोत्तम** ने नवचौरासी रासो, **राय मुरारीदान** ने मानप्रकाश तथा **जगन्नाथ** ने मानसिंह कीर्ति मुक्तावली ग्रंथ की रचना की।
- 1614 ई. में मानसिंह की **इलिचपुर (महाराष्ट्र)** में मृत्यु हो गई।

भावसिंह (1614–1621)

मिर्जा राजा जयसिंह (1621–1667 ई.)

- जयपुर शासकों में सबसे लम्बा शासनकाल (46 वर्ष)।
- तीन मुगल बादशाहों की सेवा की।

(1) जहाँगीर

- इनके समय अकबर के विरुद्ध अहमदनगर अभियान किया।

(2) शाहजहाँ

- इनके समय कंधार अभियान किया।
- शाहजहाँ ने **मिर्जा राजा** की उपाधि दी तथा 5000 का मनसबदार बनाया।
- शाहजहाँ के साथ बीजापुर और गोलकुण्डा अभियान में दक्षिण भारत गये।
- शाहजहाँ द्वारा शाहशुजा के विरुद्ध भेजी गयी मुगल सेना का नेतृत्व किया।

(3) औरंगजेब

- इनके समय शिवाजी के विरुद्ध अभियान किया।

शाहजहाँ के पुत्रों में उत्तराधिकारी संघर्ष

बहादुरपुर का युद्ध – फरवरी 1658 ई.

- शाहशुजा पर नियन्त्रण लगाने के लिए शाहजहाँ ने दाराशिकोह के पुत्र सुलेमान शिकोह व मिर्जा राजा जयसिंह को भेजा।
- इन्होंने बनारस के पास शाहशुजा को हरा दिया।
- तब शाहजहाँ ने प्रसन्न होकर मिर्जा राजा जयसिंह को **6000** का मनसबदार बनाया।

धरमत (उज्जैन) का युद्ध – 15 अप्रैल 1658 ई.

- औरंगजेब + मुराद्बख्श (सूरत) **V/S** दाराशिकोह + मारवाड़ शासक जसवंत सिंह + मिर्जा राजा जयसिंह के मध्य हुआ, जिसमें औरंगजेब विजयी हुआ।

सामूगढ़ का युद्ध – 29 मई 1658 ई.

- औरंगजेब + मुराद **V/S** दाराशिकोह के मध्य हुआ।
- औरंगजेब विजयी हुआ।

देवराई (अजमेर) का युद्ध – 14 मार्च 1659

- औरंगजेब + मिर्जा राजा जयसिंह (नेतृत्व किया था) **V/S** दाराशिकोह के मध्य हुआ, जिसमें औरंगजेब विजयी हुआ।

पुरन्दर की संधि – 11 जून 1665 ई.

- शिवाजी और मिर्जा राजा जयसिंह के मध्य हुई।
- शिवाजी ने 35 में से 23 किले मुगलों को दे दिए।
- संधि के तहत शिवाजी के पुत्र शम्भाजी को पाँच हजार का मनसबदार बनाया जाएगा।

- संधि की मध्यस्थता **रघुनाथ पण्डित अत्रे** ने की।

कला व साहित्य

- इनके दरबार में कवि **बिहारीलाल** थे जिन्होंने **बिहारी सतसई** ग्रंथ (कुल 713 दोहे) की रचना की। इनके मिर्जा राजा जयसिंह प्रत्येक दोहे पर सोने की अशर्फी देते थे।
- बिहारीलाल का भांजा **कुलपति मिश्र** मिर्जा राजा जयसिंह के दरबार में था जिसने कुल 52 ग्रंथों की रचना की।
- रामकवि ने **जयसिंह चरित्र** नामक ग्रंथ की रचना की।
- मृत्यु – **बुरहानपुर (मध्यप्रदेश)** में हुई।

सवाई जयसिंह द्वितीय (1700–1743 ई.)

- पिता – **बिशनसिंह**
- 7 मुगल बादशाहों की सेवा की।
- मूल नाम **विजयसिंह** था। औरंगजेब ने जयसिंह कर दिया तथा इनकी वाक्पटुता से प्रभावित होकर **सवाई** की उपाधि दी।
- इसके बाद जयपुर शासकों की उपाधि **सवाई** हो गई।

जाजऊ का युद्ध – 1707 ई.

- औरंगजेब के पुत्र आजम व मुहज्जम के मध्य हुआ जिसमें सवाई जयसिंह ने आजम का साथ दिया, लेकिन आजम युद्ध हार गया और मुहज्जम जीत गया।
- मुहज्जम ने युद्ध जीतने के बाद अपना नाम **बहादुर शाह प्रथम** रखा तथा विजयसिंह को आमेर का शासक बना दिया।
- आमेर का नाम **मोमिनाबाद** कर दिया और यहाँ का फौजदार **सैयद हुसैन खाँ** को बनाया।

देबारी (उदयपुर) समझौता – 1708 ई.

- सवाई जयसिंह (जयपुर) + अजीतसिंह (मारवाड़) + महाराणा अमरसिंह द्वितीय (मेवाड़) के मध्य हुआ।
- तय किया गया कि मारवाड़ का शासक अजीतसिंह को, आमेर का शासक सवाई जयसिंह को बनाया जायेगा।
- मेवाड़ महाराणा अमरसिंह द्वितीय अपनी पुत्री **चंद्रकंवरी** का विवाह सवाई जयसिंह के साथ इस शर्त पर करेंगे कि इनसे उत्पन्न पुत्र आमेर का शासक बनेगा।

बूंदी के उत्तराधिकारी में हस्तक्षेप

- *बूंदी के शासक राव बुद्धसिंह की पत्नी **अमर कंवरी** (सवाई जयसिंह की बहन) ने अपने पुत्र उम्मेदसिंह के पक्ष में मराठा सरदार राव होल्कर को आमंत्रित किया था।*
- *क्योंकि सवाई जयसिंह बूंदी का शासक **दलेल सिंह** को बनाना चाहते थे।*

भरतपुर विवाद

- *सवाई जयसिंह ने बदनसिंह को **ब्रजराज** की उपाधि दी तथा डीग की जागीर दी।*
- *मुहम्मद शाह रंगीला ने सवाई जयसिंह को **राज राजेश्वर, राजाधिराज, सवाई, सरमद-ए-राजा-ए-हिंद** की उपाधि दी।*
- *इतिहासकारों ने सवाई जयसिंह को **राजपूतों का चाणक्य** कहा है।*

हुरड़ा (भीलवाड़ा) सम्मेलन – 17-07-1734

- *योजनाकार – **सवाई जयसिंह***
- *उद्देश्य – मराठा आक्रमण को रोकने के लिए राजपूताना के सभी राज्यों को एक करना।*
- *अध्यक्ष – **मेवाड़ महाराणा जगतसिंह द्वितीय***
- *इस सम्मेलन में बूंदी से दलेलसिंह, मारवाड़ से अभयसिंह, बीकानेर से जोरावर सिंह, करौली से गोपालसिंह आये।*

घोटापुर समझौता – 1741

- *सवाई जयसिंह व पेशवा बालाजी बाजीराव के मध्य हुआ।*
- *सवाई जयसिंह तीन बार मालवा सूबेदार बने।*
- *1713 में फर्रुखसियर ने 7000 का मनसबदार बनाकर मालवा सूबेदार बनाया तथा दो बार मुहम्मद शाह रंगीला ने बनाया।*

जयपुर की स्थापना – 18 नवम्बर 1727

- *नींव रखी – **पंडित जगन्नाथ सम्राट** ने।*
- *वास्तुकार – **विद्याधर भट्टाचार्य (बंगाली)**।*
- *9 वर्ग सिद्धांत पर बसाया गया।*
- *भारत में बसने वाला प्रथम व्यवस्थित नगर (नियोजित) है।*
- *सी.वी. रमन ने इसे **रंग श्री दीप / आइलैंड ऑफ ग्लोरी** कहा।*
- *7 दरवाजे हैं, सड़कें समकोण पर काटती हैं।*
- *बिशप हेबर के अनुसार जयपुर नगर का **परकोटा** मास्को के क्रेमलिन नगर के समान है।*

जंतर-मंतर

- सवाई जयसिंह ने नक्षत्रों की गणना के लिए पाँच वेधशालाएँ बनवाई थीं:
    1. दिल्ली (सबसे प्राचीन)
    2. जयपुर
    3. बनारस
    4. मथुरा
    5. उज्जैन
- जयपुर वेधशाला सबसे बड़ी वेधशाला है, जिसे जुलाई 2010 में यूनेस्को की **विश्व धरोहर सूची** में शामिल किया गया। यह भारतीय मौसम विभाग की वेधशाला है।

खगोल – ज्योतिष

- सवाई जयसिंह ने 1725–1733 तक शुद्ध नक्षत्रों की सारणी (खगोल विज्ञान से संबंधित) बनाई जिसे मुहम्मद शाह रंगीला को भेंट की। यह सारणी **जीज मुहम्मदशाही** कहलायी।
- **जयसिंह कारिका** नामक ज्योतिष ग्रंथ की रचना की।
- खगोल शास्त्र का ज्ञान अपने **गुरु जगन्नाथ** से सीखा।
- इनके दरबार में ज्योतिषी **केवलराम** भी रहते थे जिन्होंने **लोगारिथ्म** का फ्रेंच से संस्कृत में अनुवाद किया, जिसको **विभाग सारणी** कहा जाता है।

साहित्य

- **जयसिंह कल्पद्रुम** की रचना **पुण्डरीक रत्नाकर** ने की।
- इनके समय प्रसिद्ध विद्वान **श्री कृष्ण भट्ट** ने **ईश्वर विलास** महाकाव्य की रचना की। इनके अन्य ग्रंथ **पद्य मुक्तावली, वृत्त मुक्तावली, राम गीतम्** हैं।
- **कृष्ण भट्ट** को सवाई जयसिंह ने **कवि कलानिधि** व **राम रसाचार्य** की उपाधि दी। इन्होंने **राम-रसा (राघव गीतम्)** ग्रंथ की रचना की।

सवाई जयसिंह की अन्य जानकारी

- सवाई जयसिंह गोविंद देव जी की प्रतिमा वृंदावन से जयपुर लाए तथा चंद्रमहल के पास स्थित **जयनिवास बाग** में गोविंद देव जी का मंदिर बनवाया।
- जयपुर के शासक अपने आप को **गोविंद देव जी का दीवान** मानते हैं।
- सवाई जयसिंह अंतिम हिंदू शासक हैं जिन्होंने **अश्वमेध यज्ञ** (पुण्डरीक रत्नाकर की देखरेख में) किया।
- सवाई जयसिंह पहला राजपूत शासक था जिसने **सती प्रथा** को समाप्त करने की कोशिश की तथा **विधवा पुनर्विवाह** को लागू करने के नियम बनाए।

सवाई ईश्वरी सिंह (1743–1750)

- देबारी समझौते के तहत माधोसिंह जयपुर का शासक बनना था, किंतु जयपुर के सरदारों ने **ईश्वरी सिंह** को शासक बना दिया।

राजमहल (टोंक) का युद्ध – 1 मार्च 1747

- **ईश्वरी सिंह + महाराजा सूरजमल V/S माधोसिंह + महाराणा जगतसिंह द्वितीय (मेवाड़) + मल्हार राव होल्कर (मराठा)** के मध्य युद्ध हुआ, जिसमें ईश्वरी सिंह की विजय हुई।
- इस विजय के उपलक्ष्य में ईश्वरी सिंह ने **सात मंजिला ईसरलाट** (वर्तमान – **सरगासूली**) का निर्माण करवाया।

बगरू का युद्ध – 1748 ई.

- **ईश्वरी सिंह V/S माधोसिंह + मल्हार राव होल्कर** के मध्य युद्ध हुआ, जिसमें ईश्वरी सिंह की हार हुई।
- ईश्वरी सिंह ने माधोसिंह को पाँच परगने तथा मराठों को बड़ी धनराशि देने की बात स्वीकार की।
- ईश्वरी सिंह मराठों को हर्जाना नहीं दे पाया, तो **1750 ई.** में मराठों के दबाव में **ईसरलाट** से कूदकर आत्महत्या कर ली।

सवाई माधोसिंह प्रथम (1750–1768 ई.)

- इनके राजा बनने के बाद मराठों ने फिर धनराशि माँगी।
- धन न मिलने पर मराठा सैनिकों ने जयपुर में उपद्रव मचाया।
- जयपुर के नागरिकों ने मराठा सैनिकों का कत्लेआम किया।

कांकोड़ (टोंक) का युद्ध – 1759

- माधोसिंह व मराठा सरदार **मल्हार राव होल्कर** के मध्य युद्ध हुआ, जिसमें माधोसिंह की विजय हुई।

भटवाड़ा (बारां) का युद्ध – 1761

- रणथम्भौर दुर्ग पर अधिकार के लिए **माधोसिंह V/S शत्रुशाल (कोटा) + जालिम सिंह झाला** के मध्य युद्ध हुआ, जिसमें कोटा के शासक शत्रुशाल जीत गए।
- सवाई माधोसिंह ने **1763 ई.** में **सवाई माधोपुर** नगर बसाया तथा **शील डूंगरी पहाड़ी (चाकसू–जयपुर)** में शीतला माता मंदिर का निर्माण करवाया।

सवाई प्रतापसिंह (1778–1803 ई.)

- इनके समय जयपुर पर मराठों के सर्वाधिक आक्रमण हुए।

तुंगा (लालसोट–दौसा) का युद्ध – 28 जुलाई 1787 ई.

- मोरेल नदी किनारे युद्ध हुआ।
- **सवाई प्रतापसिंह + महाराजा विजयसिंह (मारवाड़) V/S महादजी सिंधिया** के मध्य युद्ध हुआ, जिसमें महादजी सिंधिया हार गए।
- तब महादजी सिंधिया ने कहा, "**अगर मैं जीवित रहा तो जयपुर को धूल में मिला दूँगा।**"

पाटन का युद्ध – 1790 ई.

- **सवाई प्रतापसिंह + महाराजा विजयसिंह (मारवाड़) V/S महादजी सिंधिया + डी-बोइन (फ्रांसीसी सेनापति)** के मध्य युद्ध हुआ, जिसमें महादजी सिंधिया जीत गए।
- **डी-बोइन** की कब्र **मेडता (नागौर)** में है।

मालपुरा (टोंक) का युद्ध – 1800 ई.

- सवाई प्रतापसिंह व मराठा सरदार **दौलतराव सिंधिया** के मध्य युद्ध हुआ, जिसमें सवाई प्रतापसिंह की हार हुई।

साहित्य

- प्रतापसिंह का काल **जयपुर चित्रकला का स्वर्णकाल** है।
- विद्वानों एवं संगीतज्ञों के आश्रयदाता होने के साथ-साथ स्वयं भी **ब्रजनिधि** नाम से कविता लिखते थे **(ढूंढाड़ी + ब्रजभाषा में)**।

संगीत गुरु

- **चाँद खाँ** (स्वर सागर ग्रंथ की रचना की)

काव्य गुरु

- **गणपति भारती** (संगीत सागर ग्रंथ लिखा)
- इन्होंने जयपुर में **देवर्षि ब्रजपाल भट्ट** के नेतृत्व में संगीत सम्मेलन करवाकर "**राधा गोविंद संगीत सार**" नामक ग्रंथ की रचना करवाई।

- इनके दरबार में **22 संगीतज्ञ, 22 कवि, 22 ज्योतिषी, 22 विषय विशेषज्ञ** रहते थे, जिन्हें **गंधर्व बाईसी / गुणीजन खान** कहा जाता था।
- महाराष्ट्र से **तमाशा लोकनाट्य** लेकर आये, जिसके कलाकार **बंशीधर भट्ट** थे।

सवाई जगतसिंह द्वितीय

- मेवाड़ महाराणा भीमसिंह की पुत्री **कृष्णा कुमारी** का विवाह जोधपुर शासक भीमसिंह से तय हुआ था, परंतु मारवाड़ शासक भीमसिंह की मृत्यु हो जाने के कारण कृष्णा कुमारी का विवाह सवाई जगतसिंह के साथ तय हुआ।

गिंगोली (डीडवाना-कुचामन) का युद्ध – 1807 ई.

- कृष्णा कुमारी को लेकर **सवाई जगतसिंह + अमीर खाँ पिण्डारी V/S मानसिंह (मारवाड़)** के मध्य युद्ध हुआ, जिसमें सवाई जगतसिंह जीत गये।
- लेकिन बाद में मेवाड़ महाराणा भीमसिंह ने अमीर खाँ पिण्डारी की सलाह पर **अजीतसिंह चूंडावत** के हाथों कृष्णा कुमारी को जहर दिलवा दिया।
- सवाई जगतसिंह पर **नर्तकी रसकपूर** का काफी प्रभाव था। रसकपूर ने अपने नाम से सिक्के भी चलाए थे।
- **1818** में ईस्ट इंडिया कंपनी से संधि कर ली।

सवाई रामसिंह द्वितीय (1835–1880)

- अल्पायु में जयपुर के शासक बने, इसलिए अंग्रेज अधिकारी **जॉन लुडलो** ने जयपुर का प्रशासन संभाला।
- जॉन लुडलो ने जयपुर में **सती प्रथा, दास प्रथा, कन्या वध तथा दहेज प्रथा** पर रोक लगाने के आदेश जारी किए।
- **1845** में जॉन लुडलो के प्रयासों से जयपुर में सर्वप्रथम **समाधि प्रथा** पर रोक लगी।
- **1857** के स्वतंत्रता संग्राम में महाराजा रामसिंह ने अंग्रेजों की भरपूर सहायता की। इसलिए अंग्रेजों ने इन्हें **सितार-ए-हिंद** की उपाधि दी तथा **कोटपूतली** की जागीर दी।
- **1845** में जयपुर में **महाराजा व महारानी कॉलेज, संस्कृत कॉलेज तथा महाराजा लाइब्रेरी** का निर्माण करवाया।
- **1868** में अकाल राहत कार्य में **रामनिवास बाग** बनवाया।
- **प्रिंस अल्बर्ट एडवर्ड** के **1876** में जयपुर आगमन पर रामसिंह द्वितीय ने जयपुर को **गुलाबी रंग** से रंगवाया।
- जयपुर के लिए सर्वप्रथम **Pink City** शब्द का प्रयोग **स्टेनले रीड** ने अपनी पुस्तक **Royal Tour to India** में किया।
- **1857** में **मदरसा हुनरी / राजस्थान स्कूल ऑफ आर्ट एंड क्राफ्ट** की स्थापना की (कला विकास के लिए)।

- *1878 में **राम प्रकाश थिएटर (रंगमंच)** की स्थापना की, जो उत्तरी भारत का पहला रंगमंच व प्रथम फारसी थिएटर था (लोकनाट्य की कला को बढ़ावा देने के लिए)।*

सवाई माधोसिंह द्वितीय

- *__नाहरगढ़ दुर्ग__ में अपनी नौ पासवानों के लिए एक जैसे __नौ सुंदर महलों__ का निर्माण करवाया।*
- *इनको __बब्बर शेर__ के नाम से भी जाना जाता है।*
- *जब महामना __पंडित मदन मोहन मालवीय__ जी जयपुर आए, तब __बनारस हिंदू विश्वविद्यालय__ के लिए इन्होंने __5 लाख रुपये__ दिए थे।*
- *जयपुर के __सिटी पैलेस__ में __मुबारक महल__ का निर्माण करवाया।*
- *__1902__ में एडवर्ड सप्तम के राज्याभिषेक समारोह में शामिल होने के लिए इंग्लैंड गए। तब गंगा जल से भरे हुए __चाँदी के दो विशाल जार (पात्र)__ साथ लेकर गए, जो __गिनीज बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड__ में नामांकित __विश्व के सबसे बड़े जल पात्र__ हैं। (वर्तमान में सिटी पैलेस जयपुर में हैं।)*

सवाई मानसिंह द्वितीय

- *जयपुर के अंतिम शासक।*
- *प्रधानमंत्री – __मिर्जा इस्माइल__ (आधुनिक जयपुर का निर्माता)।*
- *बिहार की राजकुमारी __गायत्री देवी__ से विवाह किया।*
- *पोलो के खिलाड़ी थे, पोलो खेलते हुए मृत्यु हो गई।*
- *__29 अगस्त 1949__ को __राजस्थान उच्च न्यायालय__ के उद्घाटन कार्यक्रम की अध्यक्षता की।*
- *राजस्थान के __राजप्रमुख__ रहे।*
- *__1962__ में राज्यसभा के सदस्य बने।*
- *__1965__ में __स्पेन__ में भारत के __राजदूत__ नियुक्त किए गए।*